Peer Reviewed

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly | **Peer Reviewed** | **ISSN : 2319 - 8648**
Special Issue 36 XI Vol. I, May. 2021 | **Impact Factor : 7.139**

Index

Sr. No.	Article Title	Author	Page No.
1	Online Education: A Changing Paradigm in Rural India	Dr. Abhay M. Jadhav	1
2	Social Work Education in 21st Century: Issues and Opportunities	Dr. Jitendra S. Gandhi	6
3	Production Of Sustainable Solar Energy For India's Development	Dr. Shinde Sunita Shankarrao	10
4	अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगिता और महत्व	डॉ कुलकर्णी वनिता बाबूराव	22
5	उच्च शिक्षणात माहिती तंत्रज्ञानाची उपयुक्तता व आव्हाने	डॉ. मुक्ता सोमवंशी	27
6	भारतीय शेती - समस्या व उपाययोजना	डॉ. बालाजी तुळशीराम घुटे	32
7	अस्तित्ववाद सिध्दांत : विशेष संदर्भ ज्यॉं पॉल सार्त्र	प्रा. स्वामी सोनु मन्मथ	37
8	भंगी-अनुसूचित जातीचे लोकशाही प्रक्रियेतील सामाजिक व राजकीय स्थान : जळगांव शहर एक अभ्यास	प्रा. कमलाकर शरद इंगळे	42
9	अस्तित्ववाद : फ्रेड्रिक नित्शे	प्रा. केंद्रे रत्नाकर ज्ञानोबा	46
10	आघाडीचे राजकारण	प्रा. सुनिता शरद इंगळे	50
11	माहिती–तंत्रज्ञानाचा लोक प्रशासनावरील परिणाम: ई–शासन	प्रा.डॉ.नागनाथ वैजनाथ शेवाळे	53
12	महिला बचतगटाचा विकास	प्रा. डॉ. गौरव गोविंदराव जेवळीकर	57
13	पं.नेहरूकालीन आणि मोदी कालीन परराष्ट्रधोरणाचा तौलनिक अध्ययन	प्रा. डॉ. वळवी यशवंत	65
14	भारतीय लोकशाही आणि धार्मिक साम्प्रदायीकता एक अभ्यास	डॉ. डोंगरे एल.बी	71
15	संत नामदेवांचे तत्वज्ञान	प्रा. डॉ. गणेश बालाजीराव बेळंबे	75

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648

Issue 36 XI Vol I May. 2021 | Impact Factor : 7.139

अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगिता और महत्व

डॉ कुलकर्णी वनिता बाबूराव

हिंदी विभागाध्यक्षा, कै.रमेश वरपुड़कर महाविद्यालय, सोनपेठ. ता.सोनपेठ जि. परभणी

शिक्षा का मूल उद्देश्य ' हमें ' मानव बनाना जीवन यापन के योग्य बनाना, हमारा अधिकतम मानसिक बौद्धिक आध्यात्मिक विकास करना आदि। कहा जाता है जिस प्रकार संगमरवर के लिए शिल्प कला है उसी प्रकार मानवीय आत्मा के लिए शिक्षा है। पिछले कुछ दशकों से प्रौद्योगिकी ने हर संभव मार्ग से हमारे जीवन को पूरी तरह बदल दिया है।भारत एक सफल सूचना और संचार प्रौद्योगिकी से सज्जित देश होने के नाते सदैव सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग पर अत्यधिक बल देता रहा है।

शिक्षा नि:संदेह एक देश की मानव पूंजी के निर्माण में किए जाने वाले सर्वाधिक महत्वपूर्ण निवेशो में से एक और एक ऐसा माध्यम है जो न केवल अच्छे साक्षर नागरिकों को गढता है, बल्कि एक राष्ट्र को तकनीकी रूप से नवाचारी भी बनाता है। इस प्रकार आर्थिक वृद्धि की दिशा में मार्ग प्रशस्त होता है भारत में ऐसे अनेक कार्यक्रम और योजनाएं जैसे मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा , सर्व शिक्षा अभियान , राष्ट्रीय साक्षरता अभियान आदि शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए सरकार द्वारा आरंभ किए गए हैं। कुछ वर्षों से इस बात में काफी रुचि रही है कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी शिक्षा के क्षेत्र में कैसे उपयोग किया जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक है । सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की सहायता से छात्र अब ई पुस्तकें परीक्षा के नमूने वाले प्रश्न पत्र ,पिछले वर्षों के प्रश्नपत्र आदि। देखने के साथ संसाधन व्यक्तियों विशेषज्ञों शोधकर्ताओं व्यावसाईको और साथियों से दुनिया के किसी भी कोने पर आसानी से संपर्क कर सकते हैं। अब छात्र किसी भी समय कभी भी अपनी सुविधाअनुसार ऑनलाइन अध्ययन पाठ्यक्रम सामग्री को पढ़ सकते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ —

जैसे-जैसे मानव ने विकास किया है वैसे-वैसे सूचनाओं को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने के लिए भी द्रुत साधनों की आवश्यकता है ।जैसे-जैसे आवश्यकता बढ़ने लगी संचार के साधन भी बढ़ने लगे और धीरे-धीरे सूचना आदान-प्रदान का विकास होने लगा। सूचनाओं के आदान-प्रदान में विशेष तकनीक का प्रयोग करना , जिससे कि सूचनाओं के आदान-प्रदान में आसानी हो जाए इसी विशेष तकनीक को सूचना प्रौद्योगिकी कहते हैं। सूचना एक मानवीय विचार है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण मानवीय गतिविधियों से जुड़ा रहता है। संरचनात्मक सूचना ज्ञान है। प्रज्ञा विवेक बुद्धि का संबंध ज्ञान से है। सूचना प्राप्ति व इतला को अंग्रेजी में Information कहा जाता है। Information शब्द Latin भाषा के Infomare से बना है। जिसका मतलब है जानकारी उपलब्ध कराना । अवगत कराने,बतलाने व जताने के लिए कही गई बात सूचना है।

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Issue 36 XI Vol I May. 2021 | Impact Factor : 7.139

सूचना की परिभाषा—

1) जे बेकर के शब्दों में —"किसी विषय से संबंधित तथ्यों को सूचना कहते हैं।"

2)हाफ मैन के विचारों से—" सूचना वक्तव्य तथ्यों तथा आकृतियों का संकलन होता है।"

3) बेल के अनुसार —"सूचना समाचारों तथ्यों आंकड़ों प्रतिवेदनों, अधिनियमों,करसंहिताओं, न्यायिक निर्णयों, प्रस्ताओं और इसी तरह की अन्य चीजों से संबंधित होती है।"

इस प्रकार सूचना सामान्य तथ्य ज्ञान, आंकड़े विवेक आदि के समानार्थी है। व्यापक अर्थ में सूचना से हमारा अभिप्राय ऐसे ज्ञान से है जो किसी अर्थ में विशेष तथ्य विषय अथवा घटना से संबंधित हो और वह संप्रेषणीय हो। "सूचना एक प्रकार का मानवीय चिंतन है मानव एक चिंतनशील प्राणी है। चिंतनशील प्राणी होने के नाते इसके दिमाग में भिन्न-भिन्न तरह के विचार पनपते रहते हैं। इसी चिंतन को सूचना कहा जाता है।"1

इंटरनेट सूचना प्रौद्योगिकी का अमूल्य उपहार —

आज इंटरनेट का युग है। इंटरनेट ने वास्तव में मनुष्य जीवन को बिल्कुल बदल कर रख दिया है । इंटरनेट ने तमाम चीजों को धरातल से उठाकर तरंगों में परिवर्तित कर ऐसे कल्पनिक स्थान पर रख दिया है जिसका आज आदमी अनुमान भर ही कर सकता है। और आज यह साइबरस्पेस के नाम से जाना जाता है।2 "यहां सब कुछ उपलब्ध है आज हम उसके बिना नितांत अकेले असहाय और दिनहींन से हो गए हैं ।आज हम इंटरनेट के और इंटरनेट हमारा है। ओर इतना सब कुछ उपलब्ध कराने वाला लोगों की आंखों का तारा भला कैसे न हो ?

अध्ययन अध्यापन में सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगिता और महत्व—

मानव प्रगति का आधार है शिक्षा। विश्व की सबसे समृद्ध और सर्वाधिक विकसित सभ्यता में जिसे आज हम सिंधु घाटी सभ्यता के नाम से जानते हैं, हरेक नागरिक पढ़ा लिखा था। हम कैसे भूल सकते हैं कि जब भी कन्ही महापुरुष ने समाज में बदलाव लाना चाहा और रूढ़ियों के खिलाफ अपना अभियान छेड़ा तो उन्होंने शिक्षा को ही अपना हथियार बनाया। "वे चाहे अलग-अलग कालखंड में आए बुद्ध ईसा मसीहा या हजरत मोहम्मद हो। इन तीनों धर्मों में धर्म में सभ्यता यह है कि इनके संस्थापकों और अनुयायियों ने समाज के हाशिए के तबके को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया।"3 इन संस्थापकों के लिए धर्म का केवल एक ही अर्थ था 'मानव की मुक्ति' जाहिर है जो शिक्षा के बिना तो संभव नहीं। उनका यह गंभीर प्रयास ही कालांतर में ऐसे स्कूलों मदरसों बौद्ध विहारों तथा विश्वविद्यालयों के रूप में प्रस्तुत हुआ, जो समाज के हर तबके के लिए खुला था।

शिक्षा व्यवस्था को अधिक सुचारू, सुलभ, आकर्षक, मनोरंजक तथा प्रभावशाली बनाने में संचार के साधनों की विशेष भूमिका है। ज्ञान का निर्माण संचयन स्थानांतरण एवं विकास में सूचना एवं संचार

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Issue 36 XI Vol I May. 2021 | Impact Factor : 7.139

तकनीकी के विभिन्न साधनों की उपयोगिता महत्वपूर्ण है। आज का युग तकनीकी का युग है वैज्ञानिक खोजों तथा आविष्कारों ने जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया है सूचना तथा तकनीकी से शिक्षा का क्षेत्र अत्यधिक अत्यधिक प्रभावित हुआ है।शिक्षा क्षेत्र में रेडियो, ग्रामोफोन, टेप रिकॉर्डर ,डीवीडी प्लेयर , चलचित्र प्रक्षेपक ,मोबाइल, स्मार्टफोन, डिजिटल डायरी,पेजर,टैब,संगनक, इंटरनेट शैक्षिक उपग्रह आदि उपकरणों का शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग बढा है। शिक्षा व्यवस्था को अधिक सुचारू ,सुलभ ,आकर्षक, मनोरंजक तथा प्रभावशाली बनाने में इन उपकरणों की विशेष भूमिका है। सूचना एवं संचार तकनीकी का विकास बहुत तेजी से हो रहा है। संपूर्ण विश्व सूचना एवं संचार तकनीकी का प्रयोग अपने आर्थिक एवं सामाजिक समृद्धि के एक प्रभावी साधन के रूप में कर रहा है। भारत के विकास में संचार तकनीकी का बहुत बड़ा योगदान है।

"भारत में विभिन्न क्षेत्रों के विकास में सूचना एवं संचार तकनीकी का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा व्यवस्था में बदलाव लाने में सूचना एवं संचार तकनीकी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी एवं सरल बनाने में सूचना एवं संचार तकनीकी के विभिन्न साधन उपयोगी सिद्ध हुए हैं।"4 ज्ञान संरक्षण संवर्द्धन एवं प्रसरण के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी आज के युग में आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। शिक्षार्थियों में रूचि बढ़ाना अभीप्रेरित करना अधिगम और प्रशिक्षण देना, अनुकूल शैक्षणिक वातावरण विभिन्न शक्तियों का विकास आदि के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी महत्वपूर्ण एवं उपयुक्त है। इसके उपयोग से शिक्षण प्रक्रिया परिणाम कारक सिद्ध हुई है।

वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में सफलता प्रभावी निर्णयों पर आधारित है। प्रभावी निर्णय सभी आवश्यक सूचनाओं के समय पर उपयुक्त रूप में उपलब्ध होने पर निर्भर करता है। सूचना प्रौद्योगिकी सूचनाओं के संग्रहन, उनके समावेशीकरण, संस्करण तथा पुनः प्राप्ति की विभिन्न विधाओं का संगम है। जो संगठन अपने हित की सूचनाओं को उपलब्ध प्रौद्योगिकियों के माध्यम से परिष्कृत कर उपयोग करने में सफल होंगे. वही भविष्य में व्यवसायिक उन्नति की बाट जोड़ सकते हैं। सूचना ही शक्ति है ऐसा कई विद्वानों का मत है। सूचना ही ज्ञान का आधार है जब हम सूचनाओं और अनुभव का मिलन करते हैं तो ज्ञान एवं विज्ञान की उत्पत्ति होती है । सूचना प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन को बहुत ही सरल तथा सुगम बना दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी ने विश्व को समीप ला दिया है। इंटरनेट के प्रयोग और इंटरनेट के तीव्र विस्तार से मानव जीवन की गतिविधियों पर क्रांतिकारी प्रभाव पड़ा है। और हमारी कार्यशैली में परिवर्तन आया है ।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है सभी को 'कहीं भी और कभी भी ' गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देना। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की सहायता से अब छात्र अपनी सुविधानुसार किसी भी समय इंटरनेट पर जाकर ऑनलाइन पाठ्य -विषयों का अध्ययन कर सकते हैं। जैसे जैसे मानव आपस में संचार करने लगा इसे साधनों की आवश्यकता हुई जिनके माध्यम से संचार को सुगम बनाया जा सके। "मनुष्य के जीवन में जनसंचार एक सहज प्रवृत्ति है। इसके माध्यम से ही व्यक्ति ज्ञान -विज्ञान संबंधी नवीन तथ्यों की जानकारी प्राप्त करता है । आज जनसंचार माध्यम का इतना

विकास हो चुका है कि, घर में बैठकर इंटरनेट के माध्यम से लोगों से मित्रता की जा रही है। अपनी सभ्यता संस्कृति से उन्हें रूबरू कराया जा रहा है। तथा उनकी सभ्यता संस्कृति से हम स्वयं भी परिचित हो रहे हैं।5

उपनिषद में कहा गया है 'सा विद्या या विमुक्तए' अर्थात विद्या वह है जो व्यक्ति को अज्ञान रूपी अंधकार से मुक्ति प्रदान कर उसे मोक्ष प्रदान करती है ।सोशल नेटवर्किंग सेवाओं ने शिक्षा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। भौगोलिक सीमाओं के कारण शिक्षा की पहुंँच की सीमा को लांघ दिया है । सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट का प्रयोग उच्च शिक्षा , अनुसंधान नीति निर्माण इत्यादि क्षेत्रों में किया जा रहा है। व्यवसायिक शिक्षा व उच्च शिक्षा संप्राप्ति हेतु संप्राप्ति हेतु इन सेवाओं का प्रयोग किया जा रहा है। इन वेबसाइट का प्रयोग कर पाठ्यचर्या संबंधी विषय वस्तु पर चर्चा -परिचर्चा के अवसर प्राप्त होते हैं । विद्यार्थियों के अतिरिक्त शिक्षक सोशल नेटवर्किंग का प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को जीवंत रुचिकर वह प्रासंगिक बनाने में कर रहे हैं । विद्यालय पाठ्यचर्या के अतिरिक्त विद्यार्थियों के ज्ञान संवर्धन सजनात्मक गतिविधियों में उनकी सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु सोशल नेटवर्किंग का प्रयोग किया जा रहा है। नवीन वेब तकनीकी के अनुप्रयोग के विश्वव्यापी स्तर पर अनुसंधान संप्रेषण, गोष्ठियों के अवसर उपलब्ध हुए हैं। जिससे अनुसंधान नेटवर्कों का उत्तरोत्तर विस्तार हुआ है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के बढ़ते कदम के साथ इंटरनेट और कंप्यूटर की पहुंच बढ़ती जा रही है । इसी को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि शिक्षा के प्रसार के लिए एवं लोगों में शिक्षा के प्रति रुचि पैदा करने के लिए इंटरनेट साहित सभी उपलब्ध माध्यमों का यथोचित उपयोग करना चाहिए। इसके लिए सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं एवं व्यक्तियों को मिलकर कार्य करना चाहिए ।
औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा में सोशल नेटवर्किंग द्वारा तकनीकी व सामाजिक कौशलों का विकास हुआ है । तुरंत संदेश , संप्रेषण ,ब्लॉगिंग ,विद्यार्थी सहभागिता में वृद्धि करती है। दूरस्थ शिक्षा व अनौपचारिक शिक्षा में इसकी अत्यंत प्रासंगिकता है । सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट 'सहभागी की संस्कृति ' का निर्माण करती है ,जिसमें सामाजिक अंतर क्रिया संप्रेषण और साझेदारी के अवसरों में वृद्धि होती है ।
सूचना प्रौद्योगिकी से चेतावनी —

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत का नाम सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व स्तर पर शीर्ष पर है। यद्यपि इस प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन का कायाकल्प किया है। तथापि इससे विद्युत चुंबकीय विकिरण के रूप में होने वाले हानिकारक प्रभाव की अनदेखी या नकारा नहीं जा सकता है । अत: इस विषयक जनचेतना भी आवश्यक है । तथा इसका विवेकपूर्ण उपयोग भी समय की मांग है ।

निष्कर्ष —

सूचना प्रधान युग में सोशल नेटवर्किंग मानव के लिए अमूल्य वरदान है। जिसने समाज के प्रत्येक वर्ग को लाभान्वित किया है। पिछले कुछ दशकों से प्रौद्योगिकी ने हर संभव मार्ग से हमारे जीवन को पूरी तरह बदल दिया है । भारत एक सफल सूचना और संचार प्रौद्योगिकी से सज्जित राष्ट्र होने के नाते सदैव

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग पर अत्यधिक बल देता रहा है। शिक्षा नि:संदेह एक देश की मानव पूंजी के निर्माण में किए जाने वाले सर्वाधिक महत्वपूर्ण निवेशों में से एक और एक ऐसा माध्यम है जो न केवल अच्छे साक्षर नागरिकों को गढता है बल्कि एक राष्ट्र को तकनीकी रूप से नवाचारी भी बनाता है। और इस प्रकार आर्थिक वृद्धि की दिशा में मार्ग प्रशस्त होता है । जब से सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को एक शिक्षण माध्यम के रूप में उपयोग किया गया है इस में एक त्रुटिहिन प्रेरक साधन के रूप में कार्य किया है ।इसमें वीडियो , टेलीविजन ,मल्टीमीडिया, कंप्यूटर ,सॉफ्टवेयर का उपयोग शामिल है जिसमें ध्वनि और रंग निहित है इससे छात्र सीखने की प्रक्रिया में गहराई से जुड़ते हैं । सही मायनों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी विकास का एक अमूल्य चरण है।

संदर्भ —

1)wwwScotbuzz.org

2)सूचना प्रबंधन —संपादक सुरेशकुमार जिंदल कुलदिप कुमार— पृष्ठ 228

3)हाशिये की आवाज — सितंम्बर 2018— पृष्ठ 01 4)wwwmgahv.in>Dist>gen

4)पत्रकारिता विविध विधाएँ— डॉ राजकुमारी राणी —जयभारती प्रकाशन इलाहाबाद —पृष्ठ 63

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani